दृष्टि The Vision

drishti

ESSAY

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E1

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** [redacted] * 7102

Center & Date: Delhi / 07/07/19 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** ____________

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज्यादा अवसरों की असमानता है।

Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

यदि हमें भविल्य के विनाश से बचना है, तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

– "अरे तुम आ गये, जरा बताओं तो क्या खबर छपी है, तुम्हारे अखबार में।"

– "बताना क्या है साहब, वे ही कुछ खबरें छपती रहती है आजकल। बस स्थान और समय बदल जाता है।"

– "हाँ, ये निकट भविल्य के आसन्न खतरों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

का संकेत है।"

उपर्युक्त वार्तालाप केवल दो व्यक्तियों का वार्तालाप नहीं है बल्कि वर्तमान में हर उस बुद्धिजीवी के मन में चल रही बातें है, जो विश्व की वर्तमान स्थिति को नाजुक मानते है। उनका मानना है कि वर्तमान विश्व इन समस्याओं का एकाकी रूप में प्रतिकार करने में सक्षम है किन्तु इनका संगठित होना मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा है। सबसे पहले हमें उन आसन्न खतरों के बारे में जान लेना आवश्यक है, जिनसे वर्तमान विश्व जूझ रहा है। क्या वास्तव में हम उनका प्रतिकार नहीं कर सकते? यदि उन्हे रोकना है तो क्या किया जाना चाहिए?

वर्तमान विश्व जिस सबसे बड़ी चुनौती से जूझ रहा है, वह है- ग्लोबल वार्मिंग। यह चुनौती अपनी भयावहता धारण कर रही है. जिसका सबसे अच्छा उदाहरण है हाल ही में फ्रांस में तापमान ने आज तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। कतर में अधिकतम तापमान ६३°C तक पहुंच गया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव है कि आर्कटिक लगभग पिघल गया है, वही अंटार्कटिका की बर्फ में सैंकडो मील लंबी दरार पड चुकी है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण जलवायु परिवर्तन की घटना उत्पन्न हुई है, जिसके कारण कहीं तापमान शुन्य से भी नीचे है, तो कही तापमान 50°C से ऊपर है। विश्व की अनेको प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर है। महासागरों में जलस्तर में वृद्धि तटीय क्षेत्र को जलमग्न करने को तत्पर है।

दूसरी जिस चुनौती से विश्व जूझ रहा है, वह है - <u>संरक्षणवाद</u>। कुछ वर्ष पूर्व शुरू हुआ वैश्वीकरण संकीर्ण मानसिकता के कारण अब पुन: आदिम सभ्यता के युग की ओर ले जा रहा है, जहाँ वैश्विक समुदाय एक-दूसरे से पृथक थे। इसके साथ ही <u>अंतरिक्ष क्षेत्र में</u>, <u>परमाणु क्षेत्र में</u> में लगातार बढ़ रही प्रतिस्पर्धा ने मानव सभ्यता को पुन: शीत युद्ध की के दौर में पहुँचा दिया है, जो वैश्विक शांति एवं सुरक्षा के लिए खतरा बन गया है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इंटरनेट के आविष्कार ने दावा किया था कि विश्व के दूरस्थ क्षेत्रों तक सुविधाओं की पहुँच तुरन्त सुनिश्चित होगी किन्तु वर्तमान में यही इंटरनेट फेक न्यूज, निजता के हनन, हेट स्पीच आदि के माध्यम से मानव सभ्यता के लिए खतरा बन गया है। इस संदर्भ में एक अमेरिकी लेखक ने कहा है-

"आज हम ऐसे युग में है, जहाँ इंटरनेट हमें देख रहा है। कल टीवी भी हमें देखेगा, इससे लाभ सिर्फ इतना होगा कि हमारा लाइफ स्टाइल आसान हो जाएगा किन्तु हम राइट टू लाइफ खो देंगे।"

वर्तमान सोशल मीडिया की निजी जीवन में बढ़ती दखल अंदाजी ने इस कथन को सत्य सिद्ध किया है। साथ ही मानव जीवन में बढ़ती तकनीकी हस्तक्षेप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न संभावित खतरों तथा बढ़ते शहरी करण ने मानव जीवन में नीरसता का संचार कर दिया है। मानव अब मानव से अधिक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

महत्व तकनीकी या आभासी दुनिया को दे रहा है। PUBG जैसे वर्चुअल गेम्स का प्रचलन इसी खतरे को जन्म दिया है। इसी संदर्भ में एक कवि ने लिखा भी है-

" हर तरफ, हर जगह बेशुमार आदमी,
फिर भी तन्हाईयों का शिकार आदमी।"

विश्व के विकसित देश अपनी आर्थिक क्षमता का उपयोग वैश्विक विकास के लिए करने की बजाय आर्थिक रूप से सहायता का बहाना कर डेट ट्रैप डिप्लोमेसी के द्वारा विकासशील एवं विकसित देशों को आर्थिक रूप से उपनिवेश बनाने में लगे है। विकासशील राष्ट्रों के संसाधनों का दोहन कर वहाँ उसका लाभ नहीं पहुँचा रहे है। इससे आर्थिक विषमता, गरीबी, भुखमरी तथा बेरोजगारी जैसी समस्याएँ सामने खड़ी है।

आतंकवाद एक वृहद समस्या के रूप में उभरा है। विश्व का प्रत्येक देश इस समस्या से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ग्रसित है। इसी के परिणामस्वरूप पारंभ हुआ शरणार्थियों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

का सँकट, जिसमें मारे गये हजारो लोग मानवता के लिए एक धब्बा है। आतंकवाद का यह क्रुटिल चेहरा मानव मात्र का ही नहीं प्रकृति का भी दुश्मन है।

वर्तमान विश्व में लगातार बढ़ रही साम्प्रदायिक हिंसा वैश्विक ग्राम, सहिष्णुता, सद्भावना जैसे मानव सभ्यता के मूल्यों पर प्रहार है वहीं दूसरी ओर जातिगत अपराधों, नस्लीय भेदभाव, व लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ वर्तमान विश्व को चिंतित कर रही है। ऐसे में वर्गगत असमानता का लगातार बढ़ना भी चिंतनीय है। चूंकि मानव सभ्यता इन सभी संभावित खतरों से जूझ रही है। ऐसे में जयशंकर प्रसाद की कुछ पंक्तियाँ ~~xxx~~ परिलक्षित होती है-

" वर्गों की यह खाई बन फैली,
जो कभी नहीं है मिटने को।"

किन्तु यदि मानव सभ्यता संगठित होकर अपने ~~विकास~~, ~~सोचने का~~ विकास की दिशा, सोचने का दृष्टिकोण एवं स्वयं को स्वामी मानने की सोच में बदलाव करे तो इन सभी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

समस्याओं का समाधान न केवल संभव है बल्कि एक ऐसे विश्व का निर्माण होगा जो मानव सभ्यता की कल्पना से भी परे होगा। ऐसे विश्व के संदर्भ में मानव सभ्यता कहेगी -

"अहा कल्पना का वह जगत कितना सुन्दर होता।"

इसके लिए सर्वप्रथम ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या से निजात पाना होगा। ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देना होगा। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत जैसे नवीकरणीय संसाधनों को बढ़ावा देकर, जीवाश्म ईंधन के प्रयोग को कम किया जा सकता है। इलेक्ट्रिक व्हीकल का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए ताकि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन न्यूनतम हो।

अंतरिक्ष का प्रयोग प्रतिस्पर्धा की बजाय मानव सभ्यता के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए ताकि किसी खतरे की स्थिति में सब संगठित हो सके। परमाणु ऊर्जा में वह शक्ति है, जो सतत विकास लक्ष्य-6 (स्वच्छ एवं वहनीय ऊर्जा) की प्राप्ति में ~~सम्भव~~ है मददगार हो

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

सकती है। अतः हमें आवश्यकता है कि परमाणु बम की प्रतिस्पर्धा को रोका जाये। इसके लिए लगातार प्रयासरत रहना चाहिए।

इंटरनेट का प्रयोग जनता तथा सरकार के मध्य सूचना अन्तराल को कम करने के लिए किया जाना चाहिए तथा जनता तक सूचनाओं की तीव्रतम पहुँच सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा सफल हो सके। तकनीकी का दुरुपयोग करने की बजाय इसकी संभावनाओं को तलाशना चाहिए। विज्ञान के दुरुपयोग के संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर ने मनुष्य को चेताया थी है -

"सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार,
तो तज दे इसे मोह स्मृति के पार।"

विकसित एवं विकासशील राष्ट्र मिलकर एक ऐसे विश्व का निर्माण कर सकते है, जहाँ आर्थिक, सामाजिक विषमता समाप्त हो सकती है। विकास की यही समावेशी धारणा आज के विश्व की आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

भी है। धार्मिक आडम्बरो, जातिगत भेदभावों का आधुनिक विश्व में कोई स्थान नहीं हो सकता। अतः इन्हे दूर किया जाना आवश्यक है ताकि विश्व एकता के सूत्र में बंध सके।

आतँकवाद एक ऐसे विष की भांति है, जिसका प्रजक असमानता एवं असुरक्षा की भावना है। अतः इन समस्याओं पर वैश्विक समुदाय को मिलकर चोट करनी चाहिए। असमानता ही अधिकांश समस्याओं की जननी है। जब तक इसे समाप्त नहीं किया जाएगा, यह मानव सभ्यता के लिए खतरा बनी रहेगी। इसी संदर्भ में एक कवि ने कहा भी है -

"जब तक मनुज मनुज का,
यह सुख भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।"

अब बात की जाये कि मानव सभ्यता ने इन समस्याओं से लड़ने के लिए कौन -

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कौन से प्रयास किये है। मानव सभ्यता अपने अस्तित्व के लिए लगातार प्रतिबद्ध है। ग्लोबल वार्मिंग जैसी चुनौती से निपटने के लिए विश्व के देशों ने मिलकर पेरिस जलवायु समझौते को स्वीकार किया है ताकि एक सुरक्षित भविष्य में सभी राष्ट्र साथ मिलकर आगे बढ़ सके।

वैश्विक आतंकवाद से सभी राष्ट्र मिलकर लड़ रहे है। राष्ट्र किसी भी ऐसी शक्ति का नष्ट करना चाहते है, जो वैश्विक शांति के लिए खतरा है। शहरीकरण जैसी चुनौतियों से लड़ने के लिए मिलकर ~~प्लान~~ एक्शन प्लान बनाये गये है। आपदा से निपटने के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क को स्वीकार किया गया है।

आर्थिक - सामाजिक चुनौतियों से निपटने के लिए विश्व ने सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किये है, जिनकी प्राप्ति में सभी राष्ट्र प्रतिबद्ध होकर प्रयास कर रहे है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग लगातार बढ़ाया जा रहा है। इसके लिए विश्व सौर संगठन का निर्माण अहम कड़ी है।

अंतरिक्ष का उपयोग मानव सभ्यता के विकास के लिए किया जा रहा है। नेवीगेशन के माध्यम से दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। वहीं मौसम एवं आपदा का पूर्वानुमान लगाना, संसाधनों की खोज, समुद्री जल के संसाधनों का उपयोग आदि कार्य वर्तमान में अंतरिक्ष तकनीकी द्वारा किये जा रहे है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भले ही विश्व वर्तमान में अनेक खतरों का सामना कर रहा है किन्तु मानव सभ्यता संगठित होकर उनका प्रतिकार कर रही है। मानव ने अपने अस्तित्व की चुनौती को स्वीकारा है और उसी चुनौती को पूरा करने के लिए वह प्रयासरत भी है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

मानव सभ्यता का वर्तमान भले ही कुछ बाधाओं से ग्रसित हो किन्तु अनादिकाल से चली आ रही यह जिजीविषा इन सभी बाधाओं को दूर करेगी। इस संदर्भ में वैदिक काल की यह अवधारणा भविष्य का प्रेरणास्रोत बनेगी।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION –B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

   "The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

   The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

   Religion without ethics is like a body without soul.

नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है

"घिरा हुआ हूँ हर तरफ से,
है आइने में हवा की दहशत।"

वर्तमान विश्व एक अजीब उहापोह में है एक ओर वह विज्ञान की प्रगति से स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है, तो वहीं दूसरी ओर धर्म के नाम पर हो रही अनैतिकता से मुँह छुपाने को मजबूर है। एक ओर विश्व ने ~~मंगल~~ चाँद पर पानी की खोज का कार्य किया है, वही दूसरी ओर धर्म के नाम पर निकाह हलाला को भी मान्यता प्राप्त है। एक ओर विश्व दावा करता है कि वह अगली सदी तक मंगल पर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

बस्ती बसा लेगा वहीं दूसरी ओर धर्म के नाम पर डायन घोषित महिलाओं की रक्षा कर पाने में असमर्थ है। उक्त द्वंद्व के पीछे का कारण धर्म में अनैतिकता का समावेश है। सर्वप्रथम हमें धर्म और नैतिकता के मध्य संबंधों को जानने की आवश्यकता है।

प्राचीन काल में मानव ने प्रकृति के रहस्यों की अज्ञानता के कारण प्रकृति को ही सर्वस्व मानकर पूजन प्रारंभ किया किन्तु उसने तब यह नहीं सोचा था कि जो वह परम्परा प्रारंभ कर रहा है वह कभी मानव सभ्यता के लिए नुकसानदायक भी सिद्ध होगी।

धीरे-धीरे उसने धर्म को सामाजिक एकीकरण के माध्यम के रूप में देखा। तत्पश्चात् उसने सामाजिक व्यवस्था के संगठन के रूप में स्थापित किया। धर्म की परिभाषा दी गई - 'धियते य सः धर्म'। अर्थात् वे गुण जो मानव द्वारा धारण करने योग्य हो। इन गुणों में सहिष्णुता, सदाचार, सद्भावना करुणा, दया, सत्य, अहिंसा आदि तत्व

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सम्मिलित थे। धीरे-धीरे इन गुणों का प्रभाव स्थापित हुआ और समाज एक संगठित इकाई के रूप में स्थापित हुआ।

किन्तु कालान्तर में कुछ संकीर्ण दिमों ने धर्म की परिभाषा से छेड़छाड़ की। धर्म को पुरुष केन्द्रित किया और धीरे-धीरे इसमें अनेक विसंगतियाँ आती गई। पुरुषों ने अपनी सत्ता स्थापित कर महिलाओं का शोषण किया तो वही उच्च वर्ग ने स्वयं को धर्म का रक्षक घोषित कर शुद्रों का। इसी परम्परा में जो भी तत्व बाधक बने, ~~xxx~~ कथित धर्मरक्षकों ने उनको नष्ट कर दिया और धर्म का एक नवीन चेहरा सामने आये जो अनैतिकता से मुक्त था।

इसी नैतिकताविहीन धर्म ने महिला को अर्द्धमानव घोषित कर पापी घोषित किया। मंदिरों में प्रवेश वर्जित किया। धार्मिक रूढ़िवादी परम्पराओं ने सतीप्रथा जैसी अमानवीय परम्परा को भी तार्किक सिद्ध करने की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

~~कोशिश~~ कोशिश की वही निकाह हलाला एवं तीन तलाक के माध्यम से नारी को पुरुष की इच्छा पर निर्भर वस्तु बना दिया।

धर्म का यही नैतिकताविहीन रूप नारी को ~~पर्दा~~ पर्दे में रहने को बाध्य करता है। उसे विधवा की तरह जीवन जीने का अभिशाप्त करता है। धर्म का यही चेहरा उसे भ्रूण के रूप में ही मारने को तैयार रहता है या फिर इसी धार्मिकता के नाम पर महिलाओं को डायन घोषित कर नग्न कर घुमाया जाता है।

धर्म में नैतिकता का बास ही नारी को समता का अधिकार प्रदान करता है। धर्म की यही नैतिकता मातृसत्तात्मक समाज की स्थापना भी करती है। धर्म की नैतिकता पुरुष और नारी को समान अधिकार प्रदान करते हुये नारी को विशिष्ट महत्व देती है। इसी नैतिकता को निम्न रूप में व्यक्त किया गया।

"यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

धर्म का नैतिकता से युक्त होना मानव सभ्यता के सुख की कामना करता है। धर्म की यही नैतिकता समाज को निरन्तर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती है। जाति एवं सम्प्रदाय का भेद समाप्त होकर सम्पूर्ण प्रकृति एवं सभ्यता के लिए प्रयासरत रहना ही धार्मिक नैतिकता का रूप है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्त
मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्।"

धर्म एवं नैतिकता का समावेश संकीर्ण हितों की बजाय सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना करना चाहता है किन्तु जब संकीर्णता हावी हो जाती है तब यह साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लेती है। जो मानवता के लिए खतरा है। वर्तमान में लगभग प्रत्येक राष्ट्र इसी साम्प्रदायिकता की समस्या से लड़ रहा है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

साम्प्रदायिकता के इस रूप ने दो धर्मों को 'साथ अस्तित्व संभव नहीं' की भावना से ग्रसित किया। इसी का प्रभाव ISIS के रूप में दिखाई देता है, जो सभी धर्मों को नष्ट कर सम्पूर्ण विश्व में एक ही धर्म की स्थापना पर बल देता है किन्तु यह धर्म की विकृत व्याख्या का ही परिणाम है क्योंकि कोई भी धर्म हो, उसका जो केन्द्रीय तत्व है, वह है - 'मानवता का कल्याण'।

धर्म का संबंध प्रगतिशीलता से है। धर्म अपने समय की तमाम विकृतियों को दूर करने के लिए उपस्थित हुआ। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म का विकास तत्कालीन धार्मिक आडम्बरों, जातिगत शोषण एवं नारी के प्रति भेदभाव की समस्या की समाप्ति के लिए हुआ। किन्तु धार्मिक मठ इस प्रगतिशीलता के बाधक है। ~~धर्म~~ ये मठाधीश स्वयं के अधिकार छिन जाने के लिए किसी भी तरह की तार्किकता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को महत्व नहीं देते।

धर्म में प्रगतिशीलता उसे बहते पानी की तरह निर्मल बनाये रखती है किन्तु उसका रूढ़िवादी चेहरा किसी नाले के पानी तरह उसे दूषित कर देता है। धर्म में यदि प्रगतिशील तत्वों का समावेश नहीं है, तो वह अपनी मूल परिभाषा से विचलित हो जाता है।

धार्मिक नैतिकता मानव के साथ प्रकृति को भी महत्व देती है कि क्योंकि दोनो एक-दूसरे के पूरक है किन्तु इसका अनैतिक रूप प्रकृति को शोषित एवं मानव को स्वामी के रूप में स्थापित करता है। वर्तमान में मानव सभ्यता जिन समस्याओं का सामना कर रही है, वे धर्म में प्रकृति का समावेश नहीं होने के कारण है।

प्राचीन समय में वृक्षों की तुलना पुत्रों से की जाती थी क्योंकि इनका महत्व पता था किन्तु वर्तमान मानव अधिक ज्ञानशील होकर भी प्रकृति को अपने से दूर करता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

जा रहा है जिसका परिणाम ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन के रूप में उपस्थित है।

~~नैतिकताविहीन धर्म का समाज को एक-व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न~~

नैतिकताविहीन धर्म न्यायविरोधी भी है। धर्म में न्याय का समावेश अनिवार्यतः होता है। धर्म व्यक्ति विशेष की स्वतंत्रता, निजता को महत्व देता है। वह उसको पर्याप्त अवसर देता है ताकि किसी भी अवसर से वंचना न हो किन्तु यदि धर्म में अनैतिकता का वास है, तो यह सामाजिक न्याय के सिद्धांत की अवहेलना करता है।

नैतिकताविहीन धर्म स्वयं को श्रेष्ठतम घोषित करता है। इसी नैतिकताविहीन धर्म के कारण एक भीड़ द्वारा स्वयं निर्णय कर दिया जाता है, जो वस्तुनिष्ठ प्रकृति के विरुद्ध है। धार्मिक अनैतिकता मॉब लिंचिंग को बढ़ावा देती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

धर्म का एक पहलू इसे विज्ञान से भी जोड़ता है क्योंकि धर्म तार्किकता को महत्व देता है। तार्किकता समाज को रूढ़िवादिता से मुक्त कर एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाती है। इसी तार्किकता के कारण धर्म अपने में समय के अनुसार बदलाव भी करता है

किन्तु नैतिकतावादीय ~~समाज~~ धर्म विज्ञान को नहीं स्वीकारता। नैतिकतावादीय धर्म के लिए 'शनि' एक मानवविरोधी ग्रह होता है न कि सौर मंडल का एक ग्रह। इसी नैतिकतावादीय धर्म ने समाज को धार्मिक आडम्बरों से युक्त किया। धर्म ने तो यहाँ तक सिद्ध करने की कोशिश की कि सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता है।

धर्म का नैतिक चेहरा मनुष्य पर किसी प्रकार का बंधन आरोपित नहीं करता वह मनुष्य को प्रकृति के सभी अन्य

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

प्राणियों की भांति स्वतंत्र मानता है किन्तु नैतिकता विहीन धर्म व्यक्ति को अदृश्य आवरणों तथा बंजीरों से जकड़े रखता है, जिससे वह स्वधर्म भूल जाता है। इसी संदर्भ में एक कवि ने नैतिकता विहीन धर्म की व्याख्या इस प्रकार की -

"धर्म क्या है?
एक दुकान
ईश्वर का धंधा,
कभी घाटे में नहीं चलता।"

किन्तु यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि धर्म अपने आप में ही नैतिक मूल्यों से युक्त होता है। साथ ही अनेक उदाहरण उपस्थित है, जो धर्म की नैतिक प्रकृति की व्याख्या करते है। जैसे - अशोक का धम्म और अकबर का दीन-ए-इलाही। इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म में अनिवार्यतः नैतिकता का समावेश होता है किन्तु

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

यह उसके अनुयायी पर निर्भर करता है कि वह उन मूल्यों की व्याख्या किस प्रकार करता है। इसी संदर्भ में तुलसीदास जी का कथन ईश्वर धर्म की व्याख्या करने का सटीक उदाहरण है -

" जाकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ।"

सारांशतः स्पष्ट है कि <u>नैतिकता-विहीन धर्म एक ऐसा साधन है जिसका साध्य भी अनैतिक है</u>। यह धर्म कहलाने योग्य नहीं है, नैतिकता विहीन धर्म को <u>अनैतिक आचरण</u> कह देना ज्यादा सटीक है। अनैतिक मूल्य धर्म की मूल परिभाषा के विपरीत है क्योंकि इन मूल्यों को मानव सभ्यता द्वारा कभी धारण किया जाना संभव नहीं है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

धर्म वह है, जो संसार की भलाई में सहयोग करे। मानव जीवन को अनुभूति के उच्च स्तर पर ले जाये। मानव विकास को पूर्णता प्रदान करे न कि उसमें बाधक बने। ~~तुलसी~~ धर्म को स्पष्ट करते हुये तुलसीदास जी ने कहा भी है -

" परहित सरिस धर्म नहिं भाई
परपीडा सम नहि अधिमाई।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation